# पंच गौरव कार्यक्रम

सत्यमेव जयते

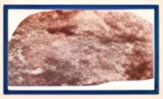

# जिला प्रशासन - ब्यावर राजस्थान

सत्यमेव
Hon'ble Chief Minister
राजस्थान सरकार की नवीन नीतियों का अनावरण
RAJASTHAN MINERAL POLICY 2024
RAJASTHAN M-SAND POLICY 2024
RAJASTHAN MSME POLICY 2024
RAJASTHAN AVGC-XR POLICY 2024
Rajasthan Tourism Unit Policy 2024


एक वर्ष
परिणाम उत्कर्ष
आपणो अग्रणी
राजस्थान

# विषय सूची


- **प्रस्तावना**
- **कार्यक्रम के उद्देश्य**
- मुख्यमंत्री जी का संदेश
- **एक जिला एक उपज**
- **एक जिला एक खेल**
- एक जिला एक पर्यटन
- **एक जिला एक प्रजाति**
- **एक जिला एक उत्पाद**

## प्रस्तावना

- ब्यावर जिले की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहां अलग-अलग तरह की उपज पैदा होती हैं एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। इसी प्रकार जिले में अलग-अलग प्रकार के औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद है। जिले में विभिन्न खेल गतिविधियां भी प्रमुख पहचान रही हैं।
- जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिकोण रखते हुए जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विषिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती हैं।
- जिलों में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों

में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया जा रहा हैं।

- कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के ब्यावर जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए पंच-गौरवके रूप में एक जिला-एक उत्पाद, एक जिला-एक उपज, एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला - एक खेल एवं एक जिला - एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं।
- जिला स्तर पर चयनित पंच-गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है।

**मुख्यमंत्री**
**राजस्थान**

## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

**(भजन लाल शर्मा)**

## कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीयशिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिले में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिले के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैष्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।जिले में समान विकास को बढ़ावा देकर विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

# एक जिला एक उपज – गेहूँ

एक जिला एक उपज

## एक जिला एक उपज (ODOP) गेंहू (ब्यावर जिले का गौरव )

ब्यावर जिले में गेहूँ (Triticum aestivum) एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है, जो की दुनिया भर में मानव आहार का अहम हिस्सा है। जिसकी बुवाई रबी सीजन में माह नवम्बर से दिसंबर तक की जाती है | जिले में गेहूँ की राज 4238, राज 3077, राज 3765, राज 4120 आदि किस्मो की बुवाई की जाती है | गेहूँ फसल की बीज दर 100 से 120 किलो/हेक्टर एवं उत्पादन लगभग 30 से 50 क्विंटल/हेक्टर है | जिले में उर्वरक व कीटनाशी का प्रयोग कम होने से उत्पादित गेहूँ का स्थानीय बाजार, पडोसी जिलो एवं पंजाब, हरियाणा जेसे राज्यों में भी मांग रहती है |

फसल गैहूँ का बवाई क्षैत्रफल, उत्पादन, उत्पादकता गत 5 वर्षो के आंकडे

| क.सं. | तहसील का नाम | वर्ष 2022–23 | | | वर्ष 2023–24 | | | वर्ष 2024–25 | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | बुवाई क्षैत्रफल | उत्पादन ( मै.टन.) | उत्पादकता (कि.ग्रा./है.) | बुवाई क्षैत्रफल | उत्पादन (मै.टन.) | उत्पादकता (कि.ग्रा./है.) | बुवाई क्षैत्रफल | उत्पादन ( मै.टन. ) | उत्पादकता (कि. ग्रा./है.) |
| 1 | टॉडगढ | 266 | 1064 | 4000 | 539 | 2156 | 4000 | 613 | 2513.3 | 4100 |
| 2 | ब्यावर | 3080 | 10472 | 3400 | 3185 | 12103 | 3800 | 5096 | 20384 | 4000 |
| 3 | मसूदा | 1903 | 6661 | 3500 | 1559 | 5378.55 | 3450 | 3520 | 12672 | 3600 |
| 4 | बिजयनगर | 1665 | 4662 | 2800 | 1804 | 5412 | 3000 | 3850 | 15400 | 4000 |
| 5 | बदनोर | 2035 | 8140 | 4000 | 1245 | 4980 | 4000 | 3525 | 14100 | 4000 |
| 6 | रायपुर | 4973 | 14223 | 2860 | 4020 | 11457 | 2850 | 7650 | 22950 | 3000 |
| 7 | जैतारण | 2400 | 14040 | 5850 | 2340 | 13384.8 | 5720 | 7400 | 42920 | 5800 |
| 8 | **औसत जिला** | **16322** | **59261** | **3772.857** | **14692** | **54871.4** | **3831.4** | **31654** | **130939** | **4071.4** |

इसका उपयोग न केवल भोजन के रूप में, बल्कि विभिन्न औद्योगिक उत्पादों एवं पशु आहार में भी किया जाता है। गेहूँ की उपयोगिता और महत्व को कई दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है।

1. आहार के रूप में उपयोगिता

गेहूँ का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग उसके आहार के रूप में है। गेहूँ से बनने वाले विभिन्न उत्पाद जैसे:

आटा: गेहूँ से आटा बनता है, जिसका उपयोग रोटियाँ, परांठे, पूरी, बिस्कुट, और अन्य खाद्य पदार्थों के बनाने में होता है।

ब्रेड: गेहूँ से बनने वाली ब्रेड पश्चिमी देशों में मुख्य आहार का हिस्सा है।

पास्ता और नूडल्स: गेहूँ के आटे से कई प्रकार के पास्ता और नूडल्स भी बनाए जाते हैं, जो विभिन्न देशों में लोकप्रिय हैं।

बेकरी उत्पाद: केक, कुकीज, मफिन्स, और पेस्ट्रीज जैसे बेकरी उत्पादों में गेहूँ के आटे का उपयोग होता है।

2. पोषण के दृष्टिकोण से महत्व

गेहूँ एक पूर्ण आहार स्रोत है, क्योंकि इसमें कई पोषक तत्व होते हैं:

कार्बोहाइड्रेट: गेहूँ ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, क्योंकि इसमें उच्च मात्रा में कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं।

प्रोटीन: गेहूँ में प्रोटीन की भी अच्छी मात्रा पाई जाती है, विशेष रूप से ग्लूटेन नामक प्रोटीन।

विटामिन्स और खनिज: गेहूँ में विटामिन बी1 (थायमिन), बी3 (नियासिन), और विटामिन ई के अलावा आयरन, मैंगनीज, और जिंक जैसे खनिज भी होते हैं।

फाइबर: गेहूँ में उच्च मात्रा में आहार फाइबर होता है, जो पाचन क्रिया को सुधारने और पेट साफ रखने में मदद करता है।

3. आर्थिक और कृषि महत्व

गेहूँ कृषि क्षेत्र में एक प्रमुख फसल है:

कृषि का आर्थिक योगदान: गेहूँ दुनिया भर में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यापारिक फसल है। इसके उत्पादन और विपणन से किसानों और देशों को आर्थिक लाभ होता है।

कृषि उत्पादन का हिस्सा: गेहूँ के उत्पादन में भारत, चीन, रूस, और संयुक्त राज्य अमेरिका प्रमुख देशों में शामिल हैं। इन देशों में गेहूँ का उत्पादन न केवल घरेलू खपत के लिए, बल्कि निर्यात के लिए भी होता है।

4. औद्योगिक उपयोग

गेहूँ का उपयोग सिर्फ खाद्य उद्योग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके कुछ औद्योगिक उपयोग भी हैं:

कागज और गोंद का निर्माण: गेहूँ के उत्पादों से कागज और गोंद भी बनते हैं।

बायोफ्यूल: गेहूँ से बायोफ्यूल भी बनाया जा सकता है, जो ऊर्जा उत्पादन में सहायक होता है।

5. स्वास्थ्य लाभ

गेहूँ का सेवन विभिन्न स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है:

हृदय स्वास्थ्य: गेहूँ में पाए जाने वाले फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स दिल के स्वास्थ्य को सुधारते हैं और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करते हैं।

वजन नियंत्रण: गेहूँ के आटे में फाइबर की अधिकता के कारण यह वजन घटाने में मदद करता है, क्योंकि यह पेट को लंबे समय तक भरा हुआ रखता है।

मधुमेह में लाभ: गेहूँ के पूरे अनाज का सेवन रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

6. सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

गेहूँ का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी है। कई संस्कृतियों में गेहूँ का महत्व है, जैसे कि:

भारत: भारत में गेहूँ की पूजा की जाती है और यह कई धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा होता है। जैसे, गेहूँ की बालियाँ फसल के रूप में किसान आशीर्वाद के रूप में प्राप्त करते हैं।

विभिन्न धार्मिक आयोजन में गेहूँ का उपयोग प्रार्थना और पूजा के समय किया जाता है.

7. वैज्ञानिक और जैविक महत्व

गेहूँ के बीजों में विविधता होती है और वे विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में उग सकते हैं।

जैविक खेती: गेहूँ की जैविक खेती पर्यावरण के लिए अनुकूल होती है, क्योंकि यह रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से मुक्त होती है।

# एक जिला एक खेल – हॉकी

# एक जिला एक खेल – हॉकी

ब्यावर का हॉकी इतिहास

ब्यावर एक ऐतिहासिक शहर, अपने समृद्ध इतिहास और संस्कृति के लिए जाना जाताहै।

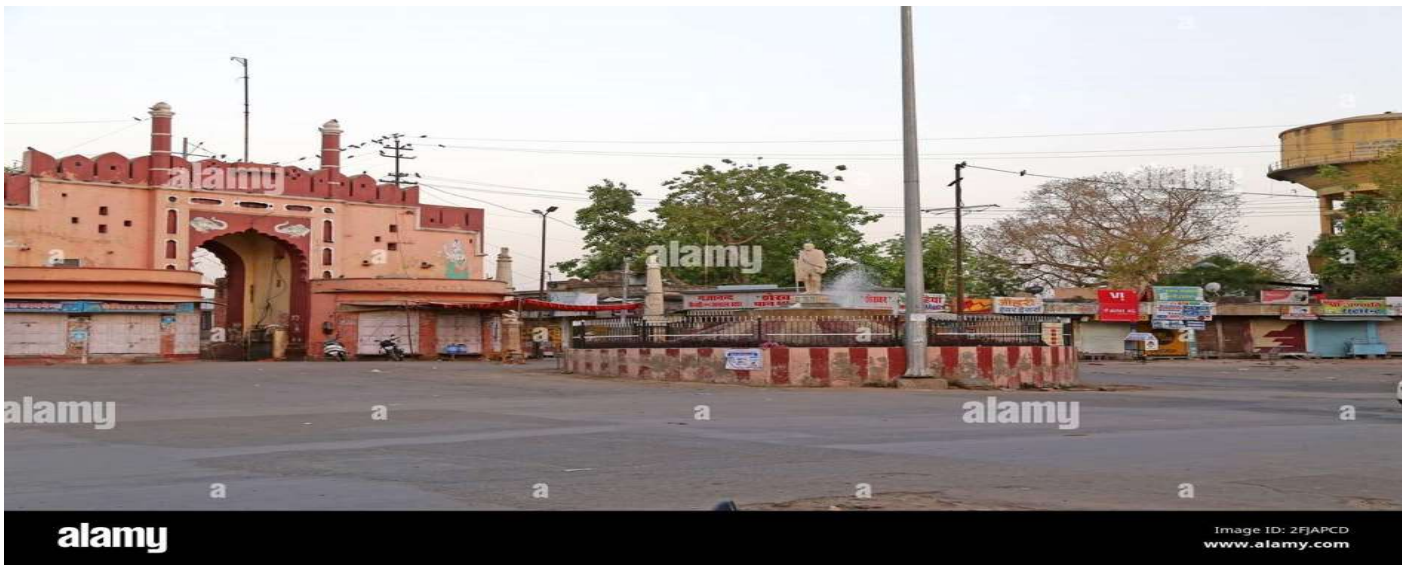


भारत का हॉकी इतिहास

• भारत में हॉकी को "राष्ट्रीय खेल" माना जाता है और इसका इतिहास बेहद समृद्ध है।

• 1928 में एम्स्टर्डम ओलंपिक में पहला स्वर्ण पदक जीता, इसके बाद 1932, 1936, 1948, 1952, 1956 तक लगातार स्वर्ण।

• मेजर ध्यानचंद जैसे खिलाड़ियों ने इसे विश्व प्रसिद्धि दिलाई।

• कुल 8 स्वर्ण, 1 रजत, और 3 कांस्य ओलंपिक पदक।

• 1980 के बाद सिंथेटिकटर्फ से प्रदर्शन प्रभावित हुआ, लेकिन 2021 व 2024 ओलंपिक कांस्य से पुनरुत्थान।

राजस्थान का हॉकी इतिहास

- राजस्थान में हॉकी का विकास भारत जितना व्यापक नहीं, लेकिन कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी उभरे।
- स्कूल और कॉलेज स्तर पर लोकप्रिय।
- जयपुर, अजमेर, और बीकानेर में हॉकी को बढ़ावा।
- ओलंपियन हनुमान सिंह 1960-70 के दशक में चमके।
- क्रिकेट और सुविधाओं की कमी ने विकास रोका, लेकिन टूर्नामेंट्स से हॉकी जीवित।

3. ब्यावर में हॉकी के खास पहलू स्थानीय स्तर पर लोकप्रियता:

- ब्यावर में हॉकी स्कूल औरकॉलेज स्तर पर खेली जाती है।

• उदाहरण: 68 वाँ राज्य-स्तरीय स्कूल टूर्नामेंट (2024) में ब्यावर ने प्रतापगढ़ को 8-1 से हराया।

खिलाड़ियों का योगदान:

- ब्यावर से राज्य स्तर पर कई खिलाड़ी उभरे।
- अजमेरजिले के साथ मिलकर राजस्थान की टीमों को मजबूती।

बुनियादी ढांचे :

- यहाँ बड़ा स्टेडियम व प्रशिक्षण केंद्र है।
- स्कूल मैदानों पर भी अभ्यास होता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक पहलू:

- हॉकी यहाँ युवाओं में जोश और एकता का प्रतीक।
- मेलों में प्रदर्शन मैच आयोजित होते हैं।

संभावनाएँ:

- बेहतर सुविधाओं से प्रतिभाएँ राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर चमक सकती हैं।

- अजमेरजिला 2024 टूर्नामेंट में सुपर लीग तक पहुँचा।

भारत और राजस्थान के गौरवशाली हॉकी इतिहास की छाया में, ब्यावर में यह खेल सीमित संसाधनों के बीच भी जीवित है । यहाँ की प्रतिभाओं को सही मंच मिले, तो ब्यावर भी हॉकी में अपनी पहचान बना सकता है।

# एक जिला-एक पर्यटन स्थल

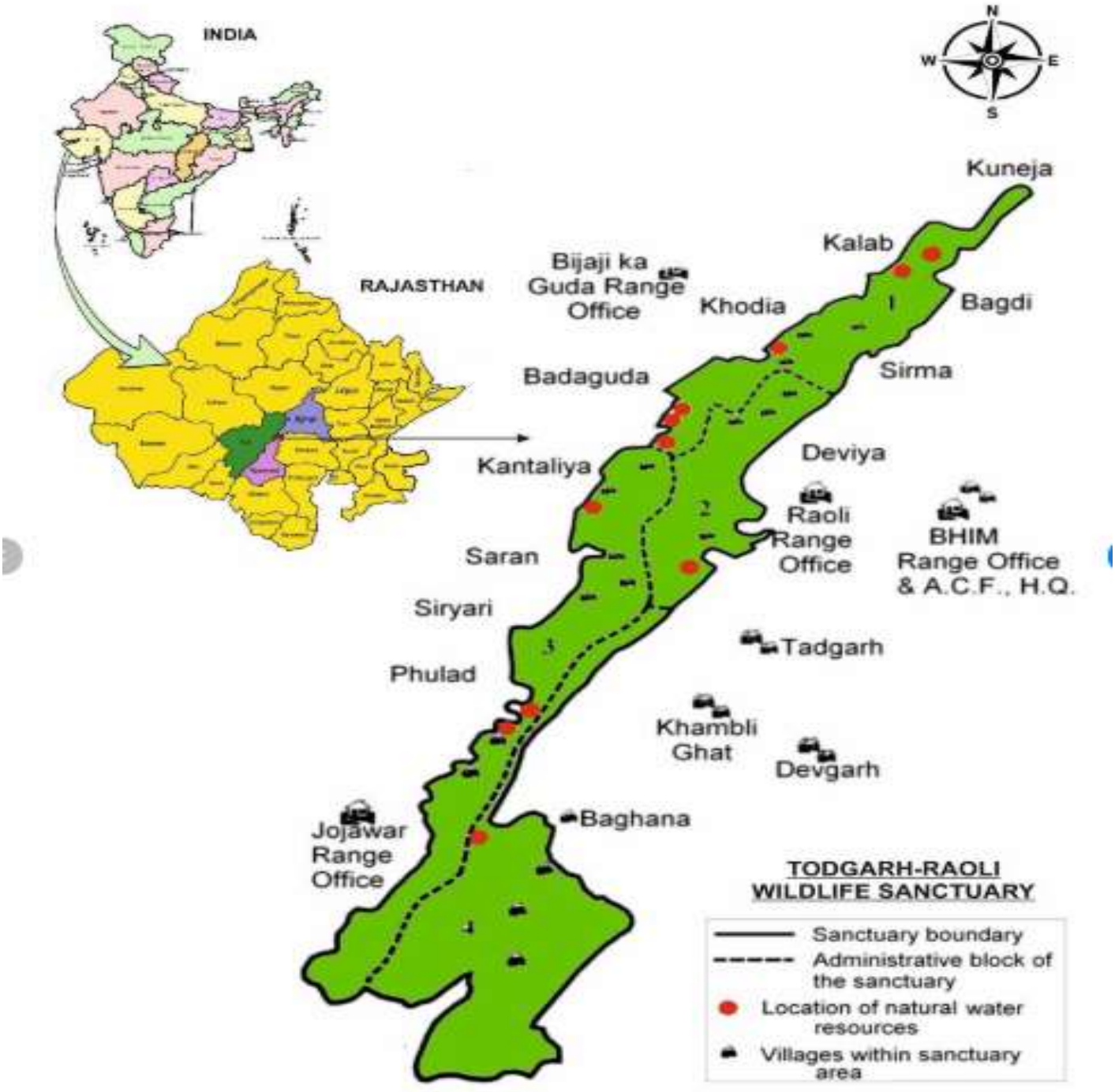


Map of Rajasthan Showing Todgarh-Raoli Wildlife Sanctuary

## एक जिला-एक पर्यटनस्थल: टाॅडगढ

टाॅडगढ ब्यावर जिला में स्थित कस्बा और ऐतिहासिक स्थल है। यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक महत्व और वन्यजीव अभ्यारण्य के लिए जाना जाता है।

स्थान और भौगोलिक स्थिति:-

टाॅड़गढ़ ब्यावर, पाली और राजसमंद जिलों के बीच एक छोटे से क्षेत्र में स्थित है। चारों ओर हरियाली से घिरे पहाड़ और जंगल इसे एक मनोरम पर्यटन स्थल बनाते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:-

टाॅड़गढ़ का नाम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी कर्नल जेम्स टॉड के नाम पर पड़ा, कर्नल टॉड ने इस क्षेत्र को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और उनके सम्मान में इसका नाम टाॅड़गढ़ रखा गया। यहाँ एक प्राचीन महादेव मंदिर और पीपलाज माता का मंदिर भी है, जो धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

पानी में पीसकर

टोड़गढ-रावली वन्यजीव अभयारण्य:-

टाॅड़गढ़-रावली वन्यजीव अभ्यारण्य इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषता है, जो 463 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यह अभ्यारण्य ब्यावर, पाली और राजसमंद जिलों में फैला हैै। यहाँ कई प्रकार के वन्यजीव जैसे तेंदुआ, भालू, सियार, लंगूर, नीलगाय, जंगली सूअर और सांभर पाए जाते हैं इसके अलावा, यहाँ पक्षियों की 140 से अधिक प्रजातियाँ भी देखी जा सकती हैं। यह अभ्यारण्य प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आकर्षक स्थान है।

पर्यटन स्थल:-

दूधालेश्वर महादेव मंदिर, चर्च एवं प्रज्ञा शिखर आदि।

**DUDHALESHWAR MAHADEV MANDIR TODGARH**

कार्य योजना:-

दूधालेश्वर महादेव मंदिर परिसर में वन विभाग के माध्यम से पर्यटकों हेतु सुविधाओं यथा टाॅयलेट काॅम्प्लैक्स, पेयजल, भव्य

प्रवेश द्वार, बैंचेज, बच्चों हेतु झूलें इत्यादि का विकास करवाया जा सकता है।

# एक जिला-एक प्रजाति-करंज

ब्यावर जिले में करंज )PongamiaPinnata (को “पंच-गौरव” हेतु चयन किया गया है। यह बहुपयोगी वृक्ष जिले के कृषि क्षेत्रों, सड़क किनारों, गोचर

एवं धार्मिक स्थलों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसकी पत्तियाँ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।आयुर्वेदीय चिकित्सा में मुख्यत: इसके बीज और बीजतैल का प्रचुर उपयोग बताया गया है। इनका अधिक उपयोग व्रणशोधक एवं व्रणरोपक, कृमिघ्न, उष्णवीर्य तथा चर्मरोगघ्न रूप में किया जाता है। करँज पचने में चरपरी, नेत्र हितकारी, गरम, कडुवी, कसैली तथा उदावर्त, वात योनी रोग, वात गुल्म, अर्श, व्रण, कण्डू, कफ, विष, कुष्ठ, पित्त, कृमि, चर्मरोग, उदररोग, प्रमेह, प्लीहा को दूर करती है। करँज के फल - गरम, हल्के तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कुष्ठ, अर्श और प्रमेह को नष्ट करते हैं। “पंच-गौरव” कार्यक्रम न केवल राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहर को संरक्षित करेगा बल्कि स्थानीय उत्पादों, कृषि उपज, पारंपरिक खेलों एवं पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देकर आर्थिक सशक्तिकरण एवं रोजगार के नए अवसर भी प्रदान करेगा। इस पहल के माध्यम से राजस्थान के सभी जिलों के सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है।

**<u>करंज की जिले में उपलब्धता:</u>**

करंज का वृक्ष जिले में बहुतायत से पाया जाने वाला वृक्ष है। यह वृक्ष सड़क मार्गों, कृषि भूमि, ओरण, गोचर, चारागाहों, सामुदायिक भवन परिसरों, धार्मिक परिसरों सहित सभी जगहों पर बहुतायत से पाया जाता है।

**<u>वर्तमान स्थिति –</u>**

- इस वृक्ष को सड़क किनारे वृक्षारोपण के लिए और शहरी वनीकरण के लिए अच्छी प्रजाति के रूप में माना जाता है। इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में विभागीय नर्सरियों में विभागीय पौध तैयारी हेतु प्राप्त लक्ष्यों में से लगभग 40 प्रतिशत पौधे करंजके पौधे तैयार किए जा रहे हैं।

**<u>जिले में पंच गौरव की अभिवृद्धि एवं सशक्तिकरण के लिए प्रस्ताव-</u>**

- वन विभाग के द्वारा करंजके पौधों की तैयारी करना।
- वन विभाग की नर्सरियों को मजबूत करना ताकि पौधों की गुणवत्ता सुनिश्चित हो।

- सड़कों, स्कूलों, और सार्वजनिक स्थानों पर शीशम के वृक्षों का वृक्षारोपण करना।
- स्थानीय समुदायों को वृक्षारोपण अभियानों में शामिल करना ताकि समुदाय का स्वामित्व बना रहे।
- स्कूलों और कॉलेजों में करंज वृक्ष के महत्व पर वर्कशॉप और सेमिनार आयोजित करना।
- सोशल मीडिया, पोस्टर, और बैनरों के माध्यम से जागरूकता फैलाना।

# करंज की पौध तैयारी

<u>करंज के विभिन्न नाम</u>

नक्तमाल, चिरबिल्ब, कटकरंज आदि तीन जातियां हैं जो करंज की हैं। करंज को हर भाषा में अलग नाम से जाना जाता है। हिंदी में इसे करंज, किरमाल, दिठोरी, पापर, करंजवा, अंग्रेजी में  इण्डियन बीच (Indian Beech),

स्मूथलीव्डपोंगेमिया (Smooth leaved pongamia), Pongam oil tree (पोंग्म ऑयल ट्री) और संस्कृत में नक्तमाल, उदकीर्य आदि कहा जाता है।

जलवायु

5 डिग्री से 50 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान तथा 500-2500 मि. मि. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र इसकी वृद्धि के लिये उपयुक्त होते हैं। अधिक बढवार व उत्पादन हेतु उपयुक्त तापक्रम 27 से 38 डिग्री सेल्सियस है यह आर्द्र एवं उपोष्णकटिबंधीय जलवायु क्षेत्र में अधिक पनपता है।

करंज पेड़ के उपयोग

**करंज** नाम से जानी जाने वाली प्रथम वृक्ष जाति को संस्कृत वाङ्मय में नक्तमाल, करंजिका तथा वृक्षकरंज आदि और लोकभाषाओं में डिढोरी, डहरकरंज अथवा कणझी आदि नाम दिए गए हैं। इसका वैज्ञानिक नाम पोंगैमियाग्लैब्रा (Pongamia glabra) है, जो लेग्यूमिनोसी (Leguminosae) कुल एवं पैपिलिओनेसी (Papilionaceae) उपकुल में समाविष्ट है। यही संभवत: वास्तविक करंज है।

यद्यपि परिस्थिति के अनुसार इसकी ऊँचाई आदि में भिन्नता होती है, परंतु विभिन्न परिस्थितियों में उगने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है। इसके वृक्ष अधिकतर नदी-नालों के किनारे स्वत: उग आते हैं, अथवा सघन छायादार होने के कारण सड़कों के किनारे लगाए जाते हैं।

इसके पत्र, पक्षवत् संयुक्त (पिन्नेटलीकंपाउंड, Pinnately compound), असम पक्षवत् (इंपेरी-पिन्नेट, Impari-pinnate) और पत्रक गहरे हरे, चमकीले और प्राय: 2-5 इंच लंबे होते हैं। पुष्प देखने में मोती सदृश, गुलाबी और आसमानी छाया लिए हुए श्वेत वर्ण के होते हैं। फली कठोर एवं मोटे छिलके की, एक बीजवाली, चिपटी और टेढ़ी नोकवाली होती है। पुष्पित होने पर इसके मोती तुल्य पुष्प रात्रि में वृक्ष के नीचे गिरकर बहुत सुंदर मालूम होते हैं। 'करंज' एवं 'नक्तमाल' संज्ञाओं की सार्थकता और काव्यों में प्रकृतिवर्णन के प्रसंग में इनका उल्लेख इसी कारण होता है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा में मुख्यत: इसके बीज और बीजतैल का प्रचुर उपयोग बतलाया गया है। इनका अधिक उपयोग व्रणशोधक एवं व्रणरोपक, कृमिघ्न, उष्णवीर्य तथा चर्मरोगघ्न रूप में किया जाता है।

**करँज** के वृक्ष बहुत बडे-बडे होते हैं। जो अधिकतर वनों में होते हैं। पत्ते पाकर पत्तों के समान गोल होते हैं। और ऊपर के भाग में चमकदार होते हैं।

**फूल**

पुष्प

इसके फूल आसमानी रंग के होते हैं। और फल भी नीले-नीले झुमकेदार होते हैं। पत्तों में दुर्गंध आती है।

**गुण**

पुष्पित कलिका

करँज पचने में चरपरी, नेत्र हितकारी, गरम, कडुवी, कसैली तथा उदावर्त, वात योनी रोग, वात गुल्म, अर्श, व्रण, कण्डू, कफ, विष, कुष्ठ, पित्त, कृमि, चर्मरोग, उदररोग, प्रमेह, प्लीहा को दूर करती है। करँज के फल - गरम, हल्के तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कुष्ठ, अर्श और प्रमेह को नष्ट करते हैं।

**पत्ते**

पत्ते

पचने में चरपरे, गरम, भेदक, पित्तजनक, हल्के तथा वात, कफ, अर्श, कृमि, घाव तथा शोथ रोग नाशक है। फूल - ऊष्ण, वीर्य तथा त्रिदोष नाशक है।

## अँकुर

रस एवं पचने में चरपरे, अग्निदीपक, पाचक, वात, कफ, अर्श, कुष्ठ, कृमि, विष, शोथ रोग को नष्ट करता है।

## करँज तेल

तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्तपित्तकारक, तथा नेत्र रोग, वात पीडा, कुष्ठ, कण्डू, व्रण तथा खुजली को नष्ट करता है। इसके लेप से त्वचा विकार दूर होते हैं घृतकरँज - चरपरा गर्म तथा व्रण, वात, सर्व प्रकार के त्वचा रोग, अर्श रोग, तथा कुष्ठ रोग को नष्ट करता है।

नाम सं- करँज, हिं-करँज, बं- डहर, म- चपडा, करँज, अं-

करंज एक औषधीय जड़ी-बूटी है. करंज के पेड़ के सभी भागों का इस्तेमाल औषधीय रूप से किया जाता है. करंज के कई फ़ायदे हैं:

- त्वचा रोगों के लिए: करंज तेल से त्वचा के घाव भरते हैं और त्वचा विकार दूर होते हैं. करंज के तेल से फोड़े-फुंसी, एक्ज़िमा, और जलन से राहत मिलती है.

- पाचन के लिए: करंज के पत्तों और छाल का इस्तेमाल पाचन विकार, कब्ज़, और बवासीर में किया जाता है.
- घाव भरने के लिए: करंज के तेल में घाव भरने और एनाल्जेसिक गुण होते हैं. करंज के पत्तों का पेस्ट घावों पर लगाया जाता है.
- दर्द और सूजन के लिए: करंज के पत्तों के अर्क से स्नान करने से दर्द और सूजन कम होती है.
- खांसी के लिए: करंज के बीजों को पानी में पीसकर खाने से खांसी ठीक होती है.
- बालों के लिए: करंज के तेल से बालों की ग्रोथ होती है और डैंड्रफ़ दूर होता है.
- दांतों के लिए: करंज के तने का इस्तेमाल दांतों की सफ़ाई और मसूड़ों को मज़बूत करने के लिए किया जाता है.
- गर्भाशय संबंधी विकारों के लिए: करंज के गुण गर्भाशय को स्वस्थ रखते हैं.

करंज के पेड़ की लकड़ी का इस्तेमाल ईंधन के लिए किया जाता है. करंज की छाल से रस्सी बनाई जाती है.

**अपेक्षित परिणाम-**

- ब्यावरजिले में करंजवृक्षों की संख्या में वृद्धि।
- स्थानीय लोगों मेंकरंज वृक्ष के प्रति जागरूकता बढाना।
- करंजउत्पादों के बारे में जागरूकता के माध्यम से आर्थिक विकास और रोजगार के अवसर।
- पर्यावरणीय स्थिरता और जैव विविधता में सुधार।

**निष्कर्ष-**

यह विस्तृत कार्ययोजना ब्यावरजिले में करंजवृक्ष के विकास और संरक्षण को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखती है। स्थानीय समुदाय के सहयोग और जागरूकता के माध्यम सेयह कार्ययोजना क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिरता को बनाए रखने और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बनाने में मदद करेगी।

# एक जिला एक उत्पाद : क्वार्टज, फैल्सपार

# एक जिला एक उत्पाद - क्वार्टज, फैल्सपार

ब्यावर जिला मिनरल ग्राईडिग के क्षेत्र में दुनिया भर में प्रमुख केन्द्रों में से एक है। ब्यावर के आसपास के क्षेत्रों में उपलब्ध खनिज – क्वार्टज, फैल्सपार के प्रचुर भण्डार उपलब्ध है। ब्यावर जिले में क्वार्टज एवं फैल्सपार ग्राईडिग की लगभग 1000 बॉल मिल संचालित है। जिन में तकरीबन 15000 लोगों को रोजगार प्रदान कर लगभग 35000 टन प्रतिदिन पाउडर का उत्पादन किया जाता है। क्वार्टज पाउडर का उपयोग ऑप्टिकल, स्ट्रक्चरल, ऑटो मोबाइल ग्लासेज, अब्रसिवेस, रीफैक्ट्रीज, सिरेमिक फ्लोर व वालटाईल्स, **Tableware** पॉटरी, सिलिकॉन सेमीकंडक्टर, पेंट, **Ferro** अलॉयज आदि के उत्पादन में किया जाता है। सोडियम व पोटेशियम फेल्सपार का उपयोग सिरेमिक टाइल्स **Tableware, Sanitaryware Abrasives,** इन्सुलेटर, ग्लास, रीफैक्ट्रीज, पॉटरी आदि के उत्पादन में किया जाता है। क्वार्टज एवं फैल्सपार पाउडर का मार्केट समस्त भारत के साथ साथ चीन, वियतनाम, मलेशिया, बांग्लादेश नजदीकी पोर्ट मुंदडा पोर्ट है। ब्यावर में बडी संख्या में बॉल मीले है जहॉ पर इन खनिजों का प्रसंस्करण किया जाता है।

# सरकारी सहायता

## परिचालन अवधि – 01–12–2024 से 31–03–2029

## राजकोषीय सहायता – नये उद्यम सृजन के लिए मार्जिन मनी सहायता

| सब्सिडी | अधिकतम मार्जिन मनी एक यूनिट के लिए सब्सिडी की अधिकतम सीमा |
|---|---|
| नए सूक्ष्म उद्यमों के लिए पात्र परियोजना लागत का 25 प्रतिशत मार्जिन मनी सब्सिडी | अधिकतम<br>रू. 15.00 लाख |
| नए सूक्ष्म उद्यमों के लिए पात्र परियोजना लागत का 15 प्रतिशत मार्जिन मनी सब्सिडी | अधिकतम<br>रू. 20.00 लाख |
| एससी/एसटीउद्यमियों/बेचमार्क विंकलागता वाले व्यक्ति (पीडब्ल्यूबीडी) 35 वर्ष से कम आयु वाले युवा उद्यमियों की ओडीओपी सूक्ष्म और लधु इकाईयों के लिए अतिरिक्त लाभ | अधिकतम<br>रू. 05.00 लाख रू. का अतिरिक्त लाभ |

- सूक्ष्म एवं लधु उद्यमों को उन्नत प्रौद्योगिकी एवं सॉफ्टवेयर के लिए 50 प्रतिशत या 5 लाख रू. तक की सब्सिडी मिलेगी ।

- गुणवत्ता प्रमाणन एवं आईपीआर के लिए 75 प्रतिशत या 3 लाख रू. तक की प्रतिपूर्ति
- अधिकतम 2 वर्षो की अवधि के लिए प्रतिवर्ष 75 प्रतिशत या 01 लाख रू. तक ई–कॉमर्स फीस प्रतिपूर्ति
- कैटलॉग एवं ई–कॉमर्स वेबसाइट के विकास के लिए 60 प्रतिशत या 75000/– रू. तक

विपणन सहायता

| क.सं | आयोजन के प्रकार | वित्तीय सहायता |
|---|---|---|
| 1 | राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय मेलो/प्रदर्शनियो ंमे ंभागीदरी | 50,000/– रू. या स्टॉल किराए का 75 प्रतिशत जो भी कम हो । |
| | | 3–एसी क्लास ट्रेनर एसी बस का वास्तविक किराया 02 व्यक्तियों के लिए |
| 2 | देश में राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय मेलो/ प्रदर्शनियो ंमें भागीदरी (इसके अलावा) | 1,50,000/– रू. या स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत जो भी कम हो, |
| | | 3 एसी क्लास का वास्तविक किराया ट्रेनर एसी बस 02 के लिए |
| 3 | विदेश में आयोजित मेला / प्रदर्शनियों में भागीदारी | एक वित्तीय वर्ष मे ंअधिकतम 1 आयोजन के लिए 2,00,000/– रू. या स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत जो भी कम हो |

आवेदन प्रक्रिया एवं आवश्यक दस्तावेज

वाणिज्यक परिचालन शुरू होने के 06 महीने के भीतर आवेदन प्रस्तुत करें :–

- उद्यम पंजीकरण प्रमाण पत्र
- उद्यमों के निगमन से संबंधित दस्तावेज
- प्राधिकरण हस्ताक्षरकर्ता
- राजस्थान ओडीडीपी उद्यम
- पंजीकरण ऋण स्वीकृति/संवितरण दस्तावेज
- सीए प्रमाणपत्र, चालन काबिल, भुगतान का विवरण आदि
- मशीनरी उपकरण, भवन निर्माण आदि का बिल

मूल्यांकन के बाद जिला स्तरीय टास्क फोर्स समिति (डीएलटीएफसी) द्वारा आवेदन को मंजूरी दी गई

अन्य योजनाएँ और नीतियाँ

- राजस्थान एम एस एम ई नीति 2024
- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति 2024
- राजस्थान एकीकृत कलस्टर विकास योजना 2024
- राजस्थान निर्यात प्रोत्साहन नीति 2024
- प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम
- डॉ0 भीमराव अंबेडकर दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना

# जिला प्रशासन,ब्यावर राजस्थान